मूल्य 1 रु.
वर्षः 11 - अंक : 214, मुंबई, बुधवार, 13 अक्टूबर, 2021 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक
मुंबई हलचल
भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त R
अब हर सच होगा उजागर

घरेलू उड़ानों पर पाबंदी हटी

18 अक्टूबर से पूरी क्षमता से चलाने की इजाजत नागरिक विमानन मंत्रालय ने दी छूट

अगस्त में हवाई यात्री 31 फीसदी बढ़े, 66 लाख ने किया सफर, महामारी के कारण एयरलाइंस को हुआ भारी नुकसान

मुंबई। नागरिक विमानन मंत्रालय ने कोरोना महामारी के बाद घरेलू उड़ानों पर लगाई पाबंदी में राहत दे दी है। 18 अक्तूबर से घरेलू व्यावसायिक उड़ानों में यात्रियों की क्षमता को लेकर लागू पाबंदियां हटा ली जाएंगी। इससे उड़ानों का संचालन पूरी क्षमता से किया जा सकेगा। सितंबर में सरकार ने घरेलू उड़ानों की यात्री क्षमता 72.5 फीसदी से बढ़ाकर 85 फीसदी कर दी थी। (शेष पृष्ठ 3 पर)

कोविड अनुकूल व्यवहार का पालन कराना होगा

पूर्ण यात्री क्षमता से उड़ानों के संचालन की इजाजत देने के साथ ही मंत्रालय ने एयर लाइंस व एयरपोर्ट आपेरटरों से यह भी कहा है कि वे कोविड-19 को फैलने से रोकने के उपाय सुनिश्चित करें और यात्रा के दौरान कोविड अनुकूल व्यवहार का कठोरता से पालन कराएं।

पिछले माह किराए को लेकर दी थी यह बड़ी राहत

केंद्र सरकार ने पिछले माह यानी सितंबर में एयरलाइंस कंपनियों को बड़ी राहत देते हुए महीने में 15 दिनों का किराया अपने अनुसार तक करने की छूट दे दी थी। बचे 15 दिनों का किराया उन्हें सरकार द्वारा तय किए गए प्राइस बैंड के अनुसार ही लेना होगा। किराए के प्राइस बैंड के तहत सरकार अब तक सबसे कम और सबसे ज्यादा किराए की लिमिट तय कर रही थी, लेकिन अब इसमें छूट दी गई है। अब सरकार महीने में 15 दिन ही यह लिमिट तय करेगी, जबकि बाकी 15 दिनों तक एयरलाइंस कंपनियां इसे अपने हिसाब से तय कर सकेंगी। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने सितंबर में घरेलू उड़ानों में यात्री क्षमता को 72.5 फीसदी से बढ़ाकर 85 फीसदी कर दिया था। 18 अक्तूबर से 100 फीसदी क्षमता से उड़ानों के संचालन की इजाजत दे दी गई है।

ऑनलाइन ठगी

अमूल के नाम पर तेजी से फॉरवर्ड हो रहा लिंक

...लग सकता है आपको चूना

संवाददाता /मुंबई। जितनी तेजी से इंडिया डिजिटल हो रहा है, उतनी ही तेजी से ऑनलाइन ठगी भी बढ़ रही है। आपके मोबाइल या मेल पर हर दिन न जाने कितने लिंक आते होंगे, जिसमें आपको कोई न कोई बड़ा ऑफर दिया जाता होगा। (शेष पृष्ठ 3 पर)

अमूल ने दी सफाई: वायरल हो रहे लिंक पर अमूल ने अपनी सफाई दी है। अमूल का कहना कि उनके नाम पर एक स्पैम लिंक और फेक मैसेज भेजा जा रहा है। इस लिंक पर क्लिक न करें। कंपनी की ओर से ऐसा कोई कैंपेन नहीं चलाया जा रहा है।

त्योहारों में बाजारों-मंदिरों में बढ़ी भीड़, मास्क पहनना भूले लोग

बढ़ सकता है संक्रमण का खतरा

मुंबई। नवरात्र के बाद दशहरा-दिवाली आने वाली है। इससे बाजारों से लेकर मंदिरों में लोगों की भीड़ बढ़ने लगी है। बाजार हों या माल, लोग आवश्यक सामानों और अपने प्रियजनों के लिए उपहारों की खरीद के लिए बाहर निकल रहे हैं। लेकिन इस दौरान लोग मास्क पहनना कम कर चुके हैं और शारीरिक नियमों का पलना करना लगातार कम करते जा रहे हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि मास्क के प्रति लोगों की ये लापरवाही भारी पड़ सकती है। (शेष पृष्ठ 3 पर)

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

दिल्ली के बीएल कपूर अस्पताल में कोरोना मामलों के नोडल अफसर डॉ. संदीप नैयर ने अमर उजाला से कहा कि कोरोना संक्रमण में भारी कमी आई है, यह सुखद संकेत है। लेकिन त्योहारों के सीजन में बाजारों-धार्मिक स्थलों पर लोगों की भीड़भाड़ बढ़ने और इस दौरान मास्क न पहनने और शारीरिक दूरी के नियमों का पालन न करने से संक्रमण बढ़ने का खतरा पैदा हो सकता है। यह कोरोना की एक नई लहर को दावत दे सकता है, इसलिए संक्रमण के प्रति लापरवाही बिलकुल सही नहीं है।

महाराष्ट्रः अंबरनाथ में फैक्टरी से लीक हुई केमिकल वाष्प

34 लोग पड़े बीमार, घटना की जांच शुरू

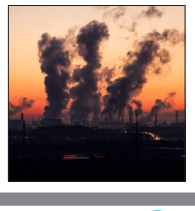

ठाणे। ठाणे नगर निगम के क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन सेल के प्रमुख संतोष कदम ने बताया कि केमिलकल वाष्प लीक होने के बाद फैक्टरी के आस-पास रहने वाले लोगों को सांस लेने में दिक्कत, आंखों में जलन, जी मिचलाना समेत अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होने लगीं। (शेष पृष्ठ 3 पर)

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

हमारी बात

चीनी हठ से मुकाबला

भारत और चीन के बीच 13वें दौर की सैन्य वार्ता से उम्मीद तो थी, लेकिन जो नतीजा निकला है, उस पर किसी को आश्चर्य नहीं होगा। चीनी सेना अर्थात पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) भारतीय सेना द्वारा दिए गए सुझावों से सहमत नहीं थी। चीन जबरन कब्जाए गए मोर्चों से पीछे हटने को तैयार नहीं है। अफसोस की बात है, भारत ने बैठक के दौरान जो सुझाव दिए, उन पर चीन ने ज्यादा गौर नहीं किया और न ही अपनी ओर से कोई प्रस्ताव रखा। जाहिर है, विवाद के बिंदुओं पर वार्ता बिल्कुल आगे नहीं बढ़ी है। साथ ही, ऐसा लगता है कि चीन यथोचित समाधान के प्रति सजग नहीं है, इसलिए उसने आक्रामक रवैया बनाए रखा है। उसने भारत के प्रस्ताव या मांगों को अनुचित और अवास्तविक करार दिया है। मतलब, चीन को हर हाल में समाधान अपने हित के अनुरूप चाहिए। वह सीमा पर निर्जन क्षेत्रों में आगे बढ़ आया है और अब पीछे हटना नहीं चाहता। उसकी आक्रामकता उसकी कमजोरी और गलत हरकत की ढाल है। क्या भारत इस ढाल को तोड़ पाएगा? क्या हम अगली वार्ता से कोई उम्मीद रखें?

चीन यह दिखाना चाहता है कि वह सीमा पर स्थिति को आसान बनाने की कोशिश कर रहा है, ईमानदारी दिखा रहा है, लेकिन क्या वह जमीनी स्तर पर वाकई ईमानदार है? चीन को भारत के नक्शे की परवाह कभी नहीं रही, वह अपने नक्शे खुद बनाता-बढ़ाता रहता है। जमीन खरोच-खरोचकर हथियाने की उसकी रणनीति नई नहीं है, लेकिन अब भारत का रुख बदला हुआ है, जिससे चीन को परेशानी हो रही है। भारत अगर अपनी सीमा में चीनी सैनिकों को आने और ठिकाने बनाने दे, तो उसे कोई दिक्कत नहीं, लेकिन जब भारत नक्शे के अनुसार अपनी जमीन वापस लेना चाहता है, तब वह अलग राग छेड़ रहा है। 13वें दौर की वार्ता में हॉट स्प्रिंग्स में तैनात चीनी सैनिकों को पीछे हटाने की मांग शामिल थी, चीन को पीछे हट जाना चाहिए था, लेकिन उसकी मंशा तनाव बढ़ाने और जमीन कब्जाए रखने की है। अक्सर देखा गया है कि भारत जब भी क्वाड या अन्य गठबंधनों की ओर झुकता है, तो चीन आक्रामकता बढ़ा देता है। इस बातचीत से पहले चीन की अरुणाचल प्रदेश में घुसपैठ की कोशिश कतई अचरज में नहीं डालती। विशेषज्ञ भी मानते हैं कि चीन का रुख आक्रामक ही रहेगा, तो फिर उपाय क्या है?

चीन के साथ वार्ता जारी रखना कूटनीतिक रूप से जरूरी है। भारत को अपने तर्कों में धार पैदा करने के साथ ही कूटनीतिक शालीनता का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। संयम रखना समय की मांग है। बेशक, चीन बिना लडे. भारत के लिए खर्च बढ़ा रहा है, तो हमें अपनी कमाई अर्थात अर्थव्यवस्था पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। आत्मनिर्भरता का अभियान कोरा नारा न रहे। हमें ईमानदारी से देखना होगा दिन-प्रतिदिन चीन पर हमारी निर्भरता घट रही है या नहीं? निर्भरता अगर बढ़ेगी, तो चीन का रवैया भी आक्रामक होगा। वह अपनी कथित बढ़ी हुई ताकत के जरिये भारत से जुड़े देशों के बीच अपना बाजार बढ़ा रहा है, तो भारत को भी पीछे नहीं हटना चाहिए। चीन से जो कंपनियां भाग रही हैं, अगर वे भारत आने लगें, तो सैन्य मोर्चे पर भी हमारा तनाव कम होगा। सैन्य मोर्चे पर जहां दृढ़ता चाहिए, वहीं आर्थिक और कूटनीतिक मंचों पर भारत की सक्रियता व तेज बढ़त ही असली समाधान है।

आंदोलन की राह

छोटे किसान और बड़े जमींदार

देश के किसानों में 80 प्रतिशत सीमांत व छोटे किसान हैं, बाकी मुट्ठी भर वे किसान हैं, जिनके पास बड़ी जमींदारी है। किसान हित की बात कर ये बड़े किसान अपने हित साध लेते हैं। यदि 80 फीसदी किसानों को न सुनकर हम दूसरी ओर भटक जाएं, तो किसानी के प्रति न्याय नहीं कर पाएंगे।

किसानों को लेकर देश भर में चला आंदोलन और इससे तमाम तरह के विवाद व घटनाएं, जो पिछले एक वर्ष से लगातार जुड़ी हैं, कई तरह के सवाल भी खड़ा करती हैं। इसमें दोराय नहीं कि किसानी इस देश की सबसे बड़ी पहचान है और शुरूआती दौर से ही देश को हमेशा से कृषि आधारित आर्थिकी को बल देने का काम करती रही है। अगर 60 से 70 प्रतिशत लोगों की आजीविका खेती-बाड़ी से जुड़ी हो, तो स्वाभाविक है कि वे देश की आर्थिकी की रीढ़ की तरह हैं।

पिछले करीब 70-75 साल पर नजर डालें, तो इस दौरान उद्योग क्षेत्र ने जो बढ़त बनाई, उसकी तुलना में किसानी उतनी लाभप्रद नहीं रही। सच यह है कि आज किसानी एक ऐसा काम बन चुका है, जिसमें कोई आकर्षण नहीं दिखाई देता। इसके लाभ बेहतर तरीके से सुनिश्चित नहीं किए गए हैं। आज देश भर में चल रहे किसान आंदोलन पर गहरी दृष्टि डालें, तो इसमें किसानी कैसे बेहतर होगी, इस पर कोई बहस या चिंता नहीं है।

सवाल देश के सीमांत और छोटे किसानों का है, जो न तो इस तरह के आंदोलनों में दिखाई देते हैं और न ही उनसे जुड़े मुद्दे उठते हैं। आज की पहली बड़ी बहस यह होनी चाहिए कि हम किसान किसे कहें? वैसे तो बड़े-बड़े फिल्म स्टार भी किसान के दायरे में आते हैं और रसूख रखने वाले जमींदार तो किसानी का दावा करते ही हैं। पर इनमें से शायद ही कभी किसी ने हल चलाया हो और पौधे रोपकर या फसल की कटाई कर पसीना बहाया हो। आज देश में किसान दो बड़े हिस्से में बंटे हैं। एक तरफ जमींदार लोग हैं, जिनकी कथित किसानी किसी उद्योग से कम नहीं और दूसरी तरफ छोटे व सीमांत किसान हैं, जिनकी कहीं कोई पूछ नहीं।

आज देश के किसानों में करीब 80 प्रतिशत सीमांत और छोटे किसान हैं और बाकी मुट्ठी भर वे किसान हैं, जिनके पास बड़ी जमींदारी है। यही बड़े किसान किसान हित की बात कर अपने हित साध लेते हैं। छोटे किसानों के पास ऐसा कोई मंच नहीं, जहां वे अपनी बात रख सकें। आज भी इन सीमांत किसानों की देश के कुल कृषि उत्पादन में 50 प्रतिशत से ज्यादा की भागीदारी है।

मतलब साफ है कि यदि 80 प्रतिशत किसानों को न सुनकर हम अन्य ओर भटक जाएं, तो किसान और किसानी के प्रति न्याय नहीं कर पाएंगे। लोकतंत्र भी यही सिखाता है। जमींदार लोग तो खेती-बाड़ी को उद्योग के रूप में ही देखते हैं, इसलिए उनके मुद्दे भी उसी तरह के होते हैं। वैसे भी सरकारी योजनाओं के सारे लाभ इन्हीं के हिस्से में आते हैं। सीमांत और छोटे किसानों को न तो इस बारे में कुछ पता होता है और न ही इस तरह के लाभ उठाने की उनकी पहुंच होती है, क्योंकि हमारा वर्तमान सरकारी ढांचा ही ऐसा है।

इस आंदोलन का नेतृत्व करने वालों और उनकी मांग की समीक्षा कर लें, तो ये किसी भी हालत में किसान के दर्जे में नहीं रखे जा सकते। हमें इस पर भी विचार करना चाहिए कि पिछले करीब 75 साल में हमने कितने सीमांत और छोटे किसान खोए हैं और इस दरम्यान बड़ी जमींदारी किस हद तक बढ़ी, क्योंकि यह भी देखने में आया है कि छोटे किसानों ने अभाव में अपने खेत बड़े किसानों को बेच दिए। आंदोलन में इस तरह के मुद्दे नहीं उठते।

किसानों के नाम पर बनने वाले तमाम तरह के कानूनों के लाभ व उनकी सार्थकता तब तक संभव नहीं, जब तक किसान और किसानी की सही परिभाषा न गढ़ ली जाए। बड़े जमींदार छोटे किसानों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। सीमांत किसानों के मुद्दे ही अलग हैं। बड़ी जमींदारी पर केंद्रित निर्णयों से छोटे और सीमांत किसानों के साथ न्याय नहीं होगा।

इसे इस तरह से भी देखा जा सकता है कि फसलों का एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) कुछ भी तय हो जाए, छोटे किसानों के पल्ले कुछ नहीं पड़ने वाला, क्योंकि जमींदार या बिचौलिये उनको लूट लेते हैं, क्योंकि हमारे पास ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, जिससे कि हम सीमांत और छोटे किसानों से सीधे खरीदारी तय कर उनके लाभ सुनिश्चित कर दें। ये अनुभव देश भर में की गई उस साइकिल यात्रा के आधार पर साझा किए जा रहे हैं, जो किसान और किसानी को समझने के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तथा उत्तराखंड से पश्चिम बंगाल के सिलिगुड़ी तक की गई थी।

उस यात्रा के दौरान छोटे किसानों के संपर्क में आने का अवसर मिला। उनका कहना था कि वे तमाम तरह की सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ इसलिए नहीं उठा पाते, क्योंकि या तो बड़े जमींदार उन योजनाओं का लाभ पहले हड़प लेते हैं या फिर छोटे किसानों के पास जानकारी का अभाव है। ऐसी कोई व्यवस्था भी सरकारी तंत्र में नहीं दिखती, जो सीधे छोटे किसानों तक पहुंच सके।

ऐसे में इस तरह के आंदोलन सीमांत किसानों की बोली नहीं बोलते, महत्वाकांक्षा व अहंकार से भी जुड़ जाते हैं। इस लंबे आंदोलन के कारण किसानों के प्रति अब आम जनों व शहरी लोगों में रोष बढ़ने लगा है। यह विडंबना ही है कि इस अड़ियलपन से किसानों के प्रति सम्मान घटने लगा है। देश हमेशा अन्नदाताओं के साथ रहा है। लेकिन आज इस आंदोलन के साथ तमाम तरह के विवाद जुड़ने के कारण इसका मूल स्वभाव तितर-बितर हो गया है। समय आ चुका है कि हम किसानों की परिभाषा नए सिरे से तय करें। किसान वह है, जो धूप और बारिश झेलता है, जो फसल तैयार करने के लिए खेत में जूझता रहता है। हम किसानी की पहचान कर लें, तो वैसे ही कई विवाद खत्म हो जाएंगे।

किसानी की परिभाषा को न्यायपालिका को भी संज्ञान में लेना चाहिए। उसने किसानों से कहा भी है कि जब कोई मामला अदालत में हो, तो फिर प्रदर्शन का कोई मतलब नहीं रह जाता। ऐसा अड़ियल स्वभाव इस देश के किसान का हो ही नहीं सकता। आंदोलन की मूल भावना अपने अधिकारों के लिए पहल करने व किसी अन्य वर्ग को नुकसान न पहुंचाते हुए सामूहिक हित की पैरवी से जुड़ी होती है।

आज यह आंदोलन अपने हितों के अलावा राजनीतिक हितों पर भी केंद्रित होता दिखता है, जिसमें सीमांत और छोटे किसानों की कोई चिंता नहीं दिखाई देती। सर्वोच्च न्यायालय को इस आंदोलन की नए सिरे से समीक्षा करनी चाहिए कि यह इस देश के सीमांत और छोटे किसानों के हित में कितना है, क्योंकि यह आंदोलन तो किसानों के हित से बहुत ऊपर उठ चुका है, जहां से न तो खेत दिखाई देते हैं और न ही किसानों के मुद्दे।

मालिक,मुद्रक,प्रकाशक-**दिलशाद एस. खान** द्वारा एस आर प्रिंटिंग प्रेस,मोहन अर्जुन कंपाउंड, वैशाली नगर दहिसर (पूर्व),मुंबई-68 से मुद्रित व मुंबई हलचल,साईं मंगल को ऑ हॉ सो बी-2-301,इस्माइल बाग नियर मालाड शॉपिंग सेंटर,एस वी रोड,मालाड (प) मुंबई से प्रकाशित RNI NO MAHHIN/2010/34146, **फोन:9619102478 /9821238815** email: mumbaihalchal@gmail com संपादक: **दिलशाद एस. खान**,
समाचार पत्र में छपे किसी भी समाचार से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा न्याय क्षेत्र मुंबई होगा।

लखीमपुर खीरी में हुए हत्याकांड को लेकर महाराष्ट्र बंद

संवाददाता / समद खान

मुंब्रा। काफी दिनों पहले गृह राज्य मंत्री के बेटे आशीष मिश्रा ने पिछले 1 वर्षों से केंद्र सरकार के विरोध में धरना आंदोलन पर बैठे किसान भाइयों पर बड़ी बेरहमी से अपनी जीभ से कुचलकर 8 लोगों को मौत के घाट उतार दिया। इसी हत्याकांड को लेकर देश का किसान मैं आक्रोश पैदा हो गया है। जिसका विरोध पूरे देश में किया जा रहा है। लेकिन योगी सरकार इस कथित तौर पर किए गए हत्याकांड के मामले को लेकर कदापि गंभीर नजर नहीं आ रही। और आरोपी आशीष मिश्रा को बचाने के पक्ष में लगी हुई है। जिसके चलते अब तक उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस के साथ योगी सरकार को फटकार लगाई है। लगातार एसआईटी द्वारा संबंध भेजने के बाद भी वह हाजिर नहीं हो रहे हैं। बीजेपी पार्टी द्वारा यह बताया जा रहा है कि, वह अस्वस्थ है योगी सरकार के दुष्परिणामों को देखते हुए महाराष्ट्र अगाडी सरकार ने किसानों पर हो रहे अत्याचार को मध्य नजर रखते हुए किसानों के समर्थन में आ गई। और गृह राज्य मंत्री के बेटे आशीष मिश्रा द्वारा किए गए हत्याकांड को लेकर योगी सरकार के विरोध में महाराष्ट्र गाड़ी सरकार ने बंद का ऐलान किया है। जिसका असर पूरे मुंब्रा शहर में भी देखने को मिला शिवसेना पार्टी के आरिफ हाशमी पूर्व नगरसेवक विजय कदम और तमाम पदाधिकारी ने बंद को कामयाब बनाया और साथ में एनसीपी ने भी किसानों का समर्थन करते हुए तमाम दुकानें रिक्शा को बंद करवा दिया। और शिवसेना पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने जमकर योगी सरकार के विरोध में नारेबाजी की और केंद्र सरकार से मांग की है की, गृह राज्य मंत्री के बेटे आशीष मिश्रा फांसी दी जाए।

मुंब्रा कलवा दिवा शील में पानी आपूर्ति को लेकर मचा हाहाकार

संवाददाता / समद खान

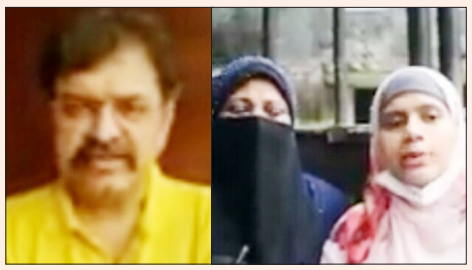

मुंब्रा। पानी आपूर्ति को लेकर कई महीनों से चली आ रही समस्याओं से शहर वासी बुरी तरह से परेशान हो गए हैं। शहर के हर एक इलाके में की यही समस्या है। पानी आपूर्ति की कमी हो रही है, जबकि मानसून में पानी के डैम को लबालब भर दिया है। फिर भी पानी की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है शहर में पानी पुरवठा विभाग को लेकर एनसीपी की नगर सेविका अश्विन राऊत फरजाना शाकिर शेख एनसीपी की युवती मर्जिया शानू पठान अपने तमाम कार्यकताओं और पदाधिकारियों को लेकर पानी पुरवठा विभाग के कार्यालय पर ताला लगा दिया। और जमकर शहर में हो रही पानी की किल्लत का भरपूर विरोध प्रदर्शन किया, और पानी पुरवठा विभाग के अधिकारियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की नगर सेविका द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार यह पानी पुरवठा विभाग के अधिकारी की भरपूर लापरवाही के कारण शहर में पानी की समस्या से शहरवासी जूझ रहे हैं। उन्होंने मनपा प्रशासन के पानी पुरवठा विभाग पर यह आरोप लगाया है। यह आए दिन कहीं ना कहीं कोई ना कोई जगह पर पानी की लाइनें टूट जाती है। आखिर क्या कारण है? मानपा अधिकारी इस ओर ध्यान क्यों नहीं देते और अब तो हद ही हो गई है। शहर में 4 दिनों से बिल्कुल भी पानी नहीं आ रहा है। और ना ही पानी पुरवठा मुंब्रा विभाग और दिवा विभाग में कोई भी अधिकारी फोन तक नहीं उठा रहा है, और ना ही किसी तरह की टैंकर की सुविधाएं पानी पुरवठा विभाग द्वारा दी जा रही है। पानी पुरवठा विभाग ने टैंकर चालकों को छुट्टी पर भेज दिया है। दूसरी ओर पानी पुरवठा विभाग अपनी लापरवाही का टिकरा एमआईडीसी पर फोड़ रहा है और कह रहा है पानी एमआईडीसी की तरफ से नहीं आ रहा है, और एमआईडीसी पानी पुरवठा विभाग पर लाइन की दुरुस्ती का कारण बता रहा है। गौरतलब बात यह है कि पानी पुरवठा विभाग मुंब्रा में आए दिन लाइने टूटती रहती है। और मरम्मत का जरा भी ध्यान नहीं रखा जाता और इसका खामियाजा शहर वासियों को भुगतना पड़ता है। शहर में हो रही पानी आपूर्ति की समस्या को ध्यान में रखते हुए कलवा मुंब्रा के विधायक तथा गृह निर्माण मंत्री ने पानी पुरवठा विभाग को अपनी कठोर शब्द में चेताया है। अगर पानी की समस्या का समाधान जल्द से जल्द नहीं निकाला गया तो उसका अंजाम पानी पुरवठा विभाग के अधिकारी को भुगतना पड़ेगा दूसरी ओर पानी की समस्या को देते हुए काग्रेस ने मौके का फायदा उठाते हुए एनसीपी पर तीरों से वार करना शुरू कर दिया। जब एक पत्रकार ने कहा एनसीपी के लोगों ने पानी पुरवठा विभाग पर ताला लगा दिया। तो जवाब में काग्रेस पदाधिकारी ने कहा यह सब ढकोसला हैं। एनसीपी का और कहां कि अगर पानी पुरवठा विभाग ने पानी की समस्या हल नहीं की तो हम सड़कों पर आकर चक्का जाम करेंगे।

मनपा प्रशासन द्वारा दिए गए 6 अस्थाई शौचालय

संवाददाता / समद खान

मुंब्रा। लगातार मुंब्रा कौसा में हो रही विपक्षी दल सामाजिक संस्थाएं द्वारा की गई शिकायतों पर आज मनपा प्रशासन ने पूरे मुंब्रा कौसा परिसर के लिए 6 अस्थाई शौचालय दिए हैं। यह शौचालय मुंब्रा रेलवे स्टेशन से लेकर व्हाई जंक्शन तक रखे गए हैं। मनपा प्रशासन के कार्यकारी अभियंता धनंजय गोसावी ने इस शौचालय के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि, हमने रोड वाइंडिंग के कारणों से मैक कंपनी के सामने शौचालय को ध्वस्त कर दिया गया। और एक दूसरा शौचालय शंकर मंदिर के पास का शौचालय को तोड़ा गया था। और लगातार लोगों की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए यह अस्थाई शौचालय मुंब्रा कौसा को दिए गए। उन्होंने बताया सफाई का पूरा ध्यान रखा जाएगा जहां पर पानी की व्यवस्था होगी। पानी अंदर ही आएगा नहीं तो हम एक पानी की ड्रम की व्यवस्था बाहर कर देंगे। अभी तो इसको कंक्रीट नहीं किया है। हम लोग जल्दी उसको कंक्रीट कर देंगे और हमको जैसी ही जगह मिलेगी हम शौचालय निर्माण कर देंगे। वहीं दूसरी ओर तंवर नगर मैं लोगों द्वारा यह शौचालय को लेकर कहां जा रहा है कि, यहां हमको जरूरत नहीं है तो मेहरबानी करके यहां से हटाकर कहीं और जगह इसको रखवा दें। यह विनती एनसीपी के यूनुस शेख ने की क्योंकि उनके अनुसार यहां रहने से दुर्गंध का वातावरण पैदा हो जाएगा, और इसी वजह से हमारे इलाके के लोग इसको रखने से मना कर रहे हैं। अब देखना यह है यह मानपा अस्थाई शौचालय मुंब्रा कौसा में कितने दिनों तक नजर आता है। लोगों की प्रतिक्रिया यह आ रही है कि, नशेड़ी व्यक्ति इसको लेकर चंपत हो जाएंगे। अगर मनपा प्रशासन ने जल्दी इस शौचालय को कंक्रीट नहीं किया।

(पृष्ठ 1 का समाचार)

घरेलू उड़ानों पर पाबंदी हटी

अब अगले सोमवार से शत प्रतिशत क्षमता के साथ देश में उड़ानों का संचालन किया जा सकेगा। यानी अब घरेलू उड़ानों में पहले की तुलना में अधिक यात्री सफर कर सकेंगे। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी इक्रा के अनुसार देश में हवाई यातायात तेजी से बढ़ रहा है। अगस्त में इसमें जुलाई के मुकाबले 31 फीसदी बढ़ोतरी हुई और यह 66 लाख यात्री प्रति माह हो गया। इससे महामारी के बाद से हवाई यात्रा में आ रही कमी की प्रवृत्ति में तेजी से बदलाव का संकेत मिला। जुलाई में घरेलू यात्रियों की संख्या 51 लाख रही थी। कोरोना महामारी की वजह से विमानन उद्योग पर काफी असर पड़ा है। लॉकडाउन के चलते कंपनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। पिछले साल विमान सेवाओं का संचालन रोक दिया गया था। कई महीने तक सेवा बंद रहने के बाद घरेलू उड़ान सेवाएं शुरू तो हुईं, लेकिन यात्री संख्या को 50 फीसदी कर दिया गया था।

ऑनलाइन ठगी

कुछ लोग तो इस तरह के मैसेज से बच जाते हैं, लेकिन ज्यादातर लोग ऐसे हैं जो इन लिंक के जरिए ऑनलाइन ठगी का शिकार हो जाते हैं। इन दिनों एक ऐसा ही लिंक अमूल जैसी बड़ी और दिग्गज कंपनी के नाम पर भेजा जा रहा है। इस लिंक में दावा किया जा रहा है कि अमूल जैसी कंपनी अपने 75 साल पूरे होने पर ग्राहकों के लिए ऑफर लेकर आई है। इस लिंक के जरिए ग्राहकों से कुछ सवाल पूछे जा रहे हैं और सही जवाब देने पर उन्हें छह हजार रुपये का इनाम दिया जा रहा है। लिंक को क्लिक करते ही एक पेज खुलता है, जिसमें अमूल का बड़ा सा लोगो दिखाई देता है। नीचे लिखा है कि कुछ सवालों का जवाब दें और जीतें 6000 रुपए। सवालों को खोलते ही आपके पास एक के बाद एक करके चार सवाल आएंगे, जिनके उत्तर देने के बाद आपके पास एक नया टैब खुलेगा। इसमें आपको नौ बॉक्स दिखाई देंगे, जिसमें अगले सवाल का जवाब देने के लिए आपको किसी एक बॉक्स को टच करना होगा। इसके लिए आपको तीन ही मौके दिए जाएंगे। यहां यह भी शर्त रखी गई है कि इस लिंक को आपको 20 दोस्तों या पांच वाट्सएप ग्रुप में भेजना होगा।

महाराष्ट्रः अंबरनाथ में फैक्टरी से लीक हुई केमिकल वाष्प

कदम ने कहा कि अंबरनाथ की महाराष्ट्र औद्योगिक विकास कॉरपोरेशन (एमआईडीसी) में स्थित एक फैक्टरी में मंगलवार की सुबह 10 बजे सल्फ्यूरिक एसिड लीक हो गया था। वहीं, बीमार पड़े लोगों को उल्हासनगर में केंद्रीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि सभी का इलाज चल रहा है और सभी की हालत फिलहाल खतरे से बाहर है। लीक की जानकारी मिलने पर स्थानीय पुलिस और दमकल कर्मी मौके पर पहुंचे थे और लीकेज को बंद कराया था। लीक के कारण जानने के लिए जांच की जा रही है।

त्योहारों में बाजारों-मंदिरों में बढ़ी भीड़

लोकल सर्किल के सर्वे में शामिल 65,000 लोगों में से 13 फीसदी लोगों ने कहा कि उनके इलाके में मास्क पहनने का पालन हो रहा है, जबकि केवल छह फीसदी लोग बोले कि उनके यहां सामाजिक दूरी के नियमों का पालन किया जा रहा है। 30 फीसदी लोगों ने माना कि यात्राओं के दौरान अभी भी मास्क पहनने के नियमों का पालन किया जा रहा है। सर्वे में सबसे ज्यादा चिंता वैक्सीनेशन केंद्रों को लेकर व्यक्त की गई है। इन केंद्रों पर भी केवल 61 फीसदी लोगों ने ही यह माना कि उनके केंद्रों पर मास्क नियमों का अनुपालन किया जा रहा था, जबकि 39 फीसदी लोगों ने माना कि उनके केंद्रों पर मास्क-सामाजिक दूरी के नियमों का पालन नहीं किया जा रहा था। चूंकि वैक्सीनेशन केंद्र पर भारी संख्या में लोग आ-जा रहे हैं, ये केंद्र कोरोना के बड़े सुपर स्प्रेडर बनकर उभर सकते हैं। कोरोना संक्रमण के मामले कम होने के साथ ही लोगों की आवाजाही बढ़ने लगी है। सर्वे में शामिल 69 फीसदी लोगों ने माना है कि पिछले एक महीने के दौरान वे कहीं न कहीं ऐसी जगह अवश्य गये हैं जहां एक बंद भवन में कामकाज करना पड़ा है। इन जगहों में मॉल, अस्पताल, शॉपिंग काम्प्लेक्स या धार्मिक भवन रहे हैं। खुले आकाश की अपेक्षा एक भवन संक्रमण की दृष्टि से ज्यादा संवेदनशील जगह होती है। 73 फीसदी लोगों ने माना कि वे किसी खुली जगह पर गये हैं। ऐसी जगहों में आसपास के बाजार सबसे ज्यादा प्रमुख स्थान थे। विशेषज्ञों का मानना है कि जब दो लोग आपस में बातचीत कर रहे होते हैं और इस दौरान उन्होंने मास्क नहीं पहना होता है तो इससे संक्रमण फैलने की संभावना 90 फीसदी तक होती है, जिसे संक्रमण नहीं है, यदि उस व्यक्ति ने मास्क पहना हुआ है लेकिन जिसे संक्रमण हुआ है उसने मास्क नहीं पहना है तो असंक्रमित व्यक्ति के संक्रमिक होने की संभावना केवल 30 फीसदी रह जाती है। और यदि संक्रमित व्यक्ति और असंक्रमित व्यक्ति दोनों ने मास्क पहन रखा हो तो इस दौरान संक्रमण फैलने की संभावना न के बराबर ही रह जाती है।

दंगल टीवी का नया धारावाहिक "सिंदूर की कीमत" हुआ लांच

18 अक्टूबर से होगा ऑन एयर

मुंबई। दंगल टीवी एक ऐसे चैनल के लिए मशहूर है जिसपे लीक से हट कर शोज दिखाए जाते हैं। इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए दंगल टीवी एक नया धारावाहिक "सिंदूर की कीमत" लेकर आ रहा है, जो 18 अक्टूबर से सिर्फ दंगल टीवी पर देखा जा सकेगा। मुम्बई में इस फिल्म के सेट पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान शो की कहानी और किरदारों से रूबरू करवाया गया। हाल ही में दंगल टीवी ने सिंदूर की कीमत का प्रोमो आउट किया जो सोशल मीडिया में खूब पसंद किया जा रहा है। सिंदूर की कीमत धारावाहिक में दर्शक मुख्य भूमिका में शहजाद शेख और वैभवी हैंकरे को देखेंगे। टीवी शो 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में नजर आ चुके टीवी एक्टर शहजाद शेख को सीरियल 'बेपनाह' में भी लोगों ने देखा था. जी टीवी के शो कुबूल है में रेहान के किरदार से मशहूर हुए शहजाद शेख सिंदूर की कीमत में अर्जुन का रोल प्ले कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वह एक वकील का रोल कर रहे हैं जो उनके लिए आसान रहा क्योंकि उनकी फैमिली में कई लोग वकालत के पेशे से जुड़े रहे हैं। यह शो सिंदूर की अहमियत को दर्शाता है और यह बताता है कि सिंदूर की कीमत कोई तय नहीं कर सकता। यह शो दरअसल पति पत्नी के नाजुक रिश्ते को महत्ता देने आ रहा है। वहीं इस शो की हिरोइन मिश्री का रोल वैभवी हैंकरे अदा कर रही हैं, जिनका यह पहला टीवी धारावाहिक है। उन्होंने शो के लॉन्च के अवसर पर कहा कि वह इस धारावाहिक और अपने किरदार मिश्री को लेकर बेहद उत्साहित हैं। यह एक ऐसा शो है जिसका हर एपिसोड दर्शक देखना चाहेंगे। चाहे इसकी मेकिंग हो, या इसकी स्टोरी हो, सिंदूर की कीमत एक कीमती टेलीविजन सीरियल है। अर्जुन के भाई का रोल प्रतीक चौधरी निभा रहे हैं जिन्हें दर्शक सीरियल परम अवतार श्री कृष्ण में देख चुके हैं। प्रतीक चौधरी ने बताया कि इस शो में उनका किरदार काफी अहम है। इस धारावाहिक का कॉन्सेप्ट दूसरे टीवी शोज से हटकर है, यही वजह है कि इसके प्रोमो को लोग खूब लाइक कर रहे हैं। सिंदूर की कीमत शो में शहजाद शेख, वैभवी हैंकरे और प्रतीक चौधरी के अलावा दादी का रोल माधवी गोगाटे, अजन की बुआ का रोल अशिता धवन कर रही हैं। अर्जुन के पिता की भूमिका में अमित कौशिक हैं तो अर्जुन की मां बनी हैं जसविंदर गार्डनर। अर्जुन के चाचा विजय सिंह प्ले कर रहे हैं वहीं मिश्री की मम्मी राजश्री रानी बनी हैं। प्रेरणा शर्मा नेगेटिव रोले प्रिय के किरदार में नजर आएँगी। 18 अक्टूबर से यह सीरियल दंगल टीवी पे प्रसारित किया जाएगा।

शिक्षा दान उत्सव

का आयोजन नशिक्षा सेवा फॉउंडेशन द्वारा

मुम्बई। पिछले कई वर्षो से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत स्वमसेवी संगठन शिक्षा सेवा फॉउंडेशन द्वारा कन्या शिक्षा के मद्देनजर " शिक्षा दान उत्सव " का आयोजन महाराष्ट्र मुम्बई के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में भी चलाया जा रहा है। मुंबई महाराष्ट्र के अलावा इस अभियान को ठाणे, पालघर, धारावी, डोम्बिवली में चलाया गया। संस्था के अध्यक्ष मणिकांत तिवारी ने बताया कि यह अभियान भारत के पांच राज्यों में चलाया जा रहा है। इस उत्सव के मुख्य अथिति अभिनेत्री श्रीमती कनिका माहेश्वरी तथा शिक्षा सेवा फाउंडेशन एडवाइजरी बोर्ड मेंबर श्री राजेंद्र थोटे का विशेष सहयोग रहा। साथ ही इस अभियान को जन जन तक पहुंचाने में वर्षा गुड़ेकर, आरिफ शेख , और नवीन कंचन ने भी अपना सहयोग दिया। शिक्षा सेवा फॉउंडेशन के अध्यक्ष मणिकांत के अनुसार इस अभियान में अब तक ५००० हजार से ज्यादा बच्चो को लाभ पहुंचाया जा चूका है। इस अभियान के अंतर्गत जरूरतमंद स्कूली बच्चो को नोट बुक, बैग, और अन्य पाठ्यकर्म की पुस्तके उपलब्ध करवाई जाती है। ज्ञात हो कि शिक्षा सेवा फॉउंडेशन ने शिक्षा दान उत्सव के साथ साथ अन्न दान का भी प्रयोजन किया था जिसके तहत ११ सौ टन अजान क वितरण किया गया। जिसमे 8680 लोगो को लाभ मिला।

छेड़छाड़ की घटना पर ऐक्टिव हुए केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी,

लेकिन लड़की ही मुकर गई

नई दिल्ली। छेड़छाड़ की किसी घटना पर केंद्रीय मंत्री खुद ऐक्शन में आ जाएं, पुलिस को भी ऐक्टिव रहने के लिए बोल दिया जाए, लेकिन बाद में पता चले कि लड़की ने खुद ऐसी किसी घटना से इनकार दिया है, तो? जी हां, ऐसा हुआ है और देश की राजधानी दिल्ली में हुआ है। बीजेपी प्रवक्ता गौरव भाटिया ने इस घटना को लेकर ट्वीट किया तो केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी तुरंत ऐक्शन में आ गए, लेकिन दिल्ली पुलिस ने बताया कि लड़की ने छेड़छाड़ की घटना से इनकार कर दिया है।

पहले पूरा मामला समझिए – सुप्रीम कोर्ट के वकील और बीजेपी प्रवक्ता गौरव भाटिया ने बीते 8 अक्टूबर को रात करीब 10.20 बजे ट्वीट किया- 'लोधी गार्डन में शाम को एक लड़की के साथ किसी बदमाश ने छेड़छाड़ की। हमने शिकायत दर्ज कराने में लड़की की मदद की। वहां बराबर आने वाले लोगों ने अनुरोध किया है कि अधिक एलईडी और सीसीटीवी लगाए जाएं। मैं हरदीप पुरी जी से इस पर गौर करने का अनुरोध करता हूं क्योंकि यह सभी को सुरक्षित रखने में एक लंबा सफर तय करेगा।'

ऐक्शन में आए मंत्री जी – कल यानी 11 अक्टूबर को केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने गौरव भाटिया के ट्वीट का संज्ञान लिया। उन्होंने लिखा- 'घटना को मेरे ध्यान में लाने के लिए धन्यवाद गौरव भाटिया जी। मुझे ठऊटउ चेयरमैन ने बताया कि वे पहले से ही लोधी गार्डन और उसके आसपास के महत्वपूर्ण स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की प्रक्रिया में हैं। गार्ड और पट्रोलिंग की संख्या भी बढ़ा दी गई है।'

केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने आगे लिखा– 'अन्य सुरक्षा उपायों जैसे गार्डन की दीवारों को मजबूत करना और बाड़ की मरम्मत भी नियमित रूप से यूएलबी द्वारा की जा रही है जो बगीचे में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था भी सुनिश्चित करती है। इसके अलावा दिल्ली पुलिस से भी विशेष रूप से विषम घंटों के दौरान अपनी चौकसी बढ़ाने का अनुरोध किया गया है।'

लेकिन लड़की ने छेड़छाड़ से इनकार कर दिया केंद्रीय मंत्री के ट्वीट पर रिप्लाई करते हुए नई दिल्ली के डीसीपी ने कहा- 'सर, घटना की सूचना पर पुलिस ने तत्काल कार्रवाई की। हालांकि, लड़की ने पुलिस को बताया कि यह जानबूझकर नहीं किया गया था और वह इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं चाहती। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि महिला सुरक्षा सुनिश्चित करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मोदी का विपक्ष पर तंज

NHRC के कार्यक्रम में बोले मानवाधिकार का बहुत ज्यादा हनन तब होता है जब किसी घटना को राजनीतिक चश्मे से देखा जाता है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने हाल की घटनाओं को लेकर विपक्ष पर तंज कसा। मोदी ने मानवाधिकारों की बात करते हुए कहा कि इससे जुड़ा एक और पक्ष है, जिसकी चर्चा मैं आज करना चाहता हूं। हाल के वर्षों में मानवाधिकार की व्याख्या कुछ लोग अपने-अपने तरीके से, अपने-अपने हितों को देखकर करने लगे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, 'एक ही प्रकार की किसी घटना में कुछ लोगों को मानवाधिकार का हनन दिखता है और वैसी ही किसी दूसरी घटना में उन्हीं लोगों को मानवाधिकार का हनन नहीं दिखता। इस प्रकार की मानसिकता भी मानवाधिकार को बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। मानवाधिकार का बहुत ज्यादा हनन तब होता है जब उसे राजनीतिक रंग से देखा जाता है, राजनीतिक चश्मे से देखा जाता है, राजनीतिक नफा-नुकसान के तराजू से तौला जाता है। इस तरह का सिलेक्टिव व्यवहार, लोकतंत्र के लिए भी उतना ही नुकसानदायक होता है।' मोदी ने कहा कि कुछ लोग मानवाधिकारों के नाम पर देश की छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं, इससे हमें सतर्क रहने की जरूरत है। मोदी ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई और हमारा इतिहास मानवाधिकारों के मूल्यों के लिए प्रेरणा के बड़े स्त्रोत हैं। प्रधानमंत्री का यह बयान ऐसे समय सामने आया है जब उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में हुई हिंसा में 4 किसानों के मारे जाने को विपक्ष ने मुद्दा बना रखा है। बता दें कि इस हिंसा का मुख्य आरोपी आशीष मिश्र केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र का बेटा है। विपक्ष का आरोप है कि सरकार आशीष को बचाने की कोशिश कर रही है। हालांकि पुलिस ने आशीष को गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के सख्ती दिखाने के बाद ये कार्रवाई की गई है।

मोदी के भाषण में गरीब, दिव्यांगों और मुस्लिम महिलाओं पर भी जोर – अपने संबोधन में मोदी ने गरीबों, दिव्यांगों और मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की बात भी की। उन्होंने कहा कि भारत ने इसी कोरोना काल में गरीबों, असहायों, बुजुर्गों को सीधे उनके खाते में आर्थिक मदद दी है। प्रवासी श्रमिकों के लिए वन नेशन वन राशन कार्ड की सुविधा भी शुरू की गई है, ताकि वो देश में कहीं भी जाएं, उन्हें राशन के लिए भटकना न पड़े। प्रधानमंत्री ने पैरालिंपिक का जिक्र करते हुए कहा कि हमारे दिव्यांग भाई-बहनों की क्या शक्ति है, ये हमने हाल के पैरालिंपिक में फिर अनुभव किया है। बीते वर्षों में दिव्यांगों को सशक्त करने के लिए भी कानून बनाए गए हैं, उनको नई सुविधाओं से जोड़ा गया है।

महिलाओं को 26 हफ्ते की पेड मैटरनिटी लीव दे रहे - मोदी ने कहा कि आज महिलाओं के लिए काम के अनेक सेक्टर्स को खोला गया है, वो 24 घंटे सुरक्षा के साथ काम कर सकें, इसे सुनिश्चित किया जा रहा है। दुनिया के बड़े-बड़े देश ऐसा नहीं कर पा रहे, लेकिन भारत आज करियर वुमन को 26 हफ्ते की पेड मैटरनिटी लीव दे रहा है।

मुस्लिम महिलाओं को नया अधिकार दिया - ट्रिपल तलाक के खिलाफ कानून की बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि बीते वर्षों में देश ने अलग-अलग वर्गों में, अलग-अलग स्तर पर हो रहे इंजस्टिस को भी दूर करने का प्रयास किया है। दशकों से मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक के खिलाफ कानून की मांग कर रही थीं। हमने ट्रिपल तलाक के खिलाफ कानून बनाकर, मुस्लिम महिलाओं को नया अधिकार दिया है।

अंधेरी पश्चिम में 24.7 एम्बुलेंस की सुविधा शुरू

मुंबई। ओम सेवा ट्रस्ट द्वारा अंधेरी पश्चिम में 24.7 के लिए एम्बुलेंस शुरू की गई, इस अवसर पर सुप्रसिद्ध अभिनेता सलमान खान के बॉडीगार्ड शेरा ने झंडा हिलाकर एम्बुलेंस की शुरूआत किया, यह सुविधा सभी जरूरत मंदो के लिए निम्न राशि लेकर की जायेगी, अत्यधिक जरूरतमंद लोगों को मुफ्त भी दी जाएगी, यह सुविधा सिर्फ अंधेरी में मिलेगी, इस कार्यक्रम का मुख्यरूप से संयोजक विजय ने किया, आबिद अली बेग, अस्लम कुरेशी, आजम, गुलाम अली सहित कई लोगो ने शिरकत किया।

अब बच्चों को भी कोरोना वैक्सीन

देश में 2 से 18 साल के बच्चों को कोवैक्सिन लगाने को DCGI की मंजूरी

नई दिल्ली। देश में अब बच्चों को भी कोरोना वैक्सीन लगाई जा सकेगी। केंद्र सरकार ने 2 से 18 साल के बच्चों के वैक्सीनेशन के लिए स्वदेशी कोवैक्सीन को मंजूरी दे दी है। ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया यानी DCGI के मुताबिक वैक्सीन की दो डोज दी जाएंगी। हालांकि इसकी डीटेल्ड गाइडलाइन जारी होनी अभी बाकी है। DCGI की सब्जेक्ट एक्सपर्ट कमेटी बच्चों को वैक्सीन लगाने की प्रोसेस और दो डोज के बीच रखे जाने वाले अंतर की भी जानकारी देगी। अभी देश में वयस्कों को तीन वैक्सीन लगाई जा रही हैं। कोवैक्सिन, कोवीशील्ड और स्पुतनिक-श्। इनमें से कोवैक्सिन को भारत बायोटेक ने बनाया है। कोवीशील्ड बनाने वाला सीरम इंस्टीट्यूट भी बच्चों की वैक्सीन कोवोवैक्स को बनाने की तैयारी कर रहा है। वहीं, जायडस कैडिला की वैक्सीन जायकोव-डी का क्लिनिकल ट्रायल पूरा हो चुका है। उसे मंजूरी का इंतजार है। ये बड़ों के साथ बच्चों को भी लगाई जा सकेगी।

तीन फेज के ट्रायल के बाद कोवैक्सिन को अप्रूवल-DCGI की सब्जेक्ट एक्सपर्ट कमेटी ने तीसरी लहर की चेतावनी के बाद 12 मई को बच्चों पर कोवैक्सिन के ट्रायल की सिफारिश की थी। इसे मानते हुए ऊठऋक ने ट्रायल की मंजूरी दी थी। भारत बायोटेक ने बच्चों पर कोवैक्सिन का ट्रायल जून में शुरू किया था। कोवैक्सिन को तीन फेज के ट्रायल के बाद बच्चों पर इस्तेमाल की मंजूरी दी गई है। दुनिया के अलग-अलग देशों में भी इसी तरह के ट्रायल्स के बाद बच्चों के लिए वैक्सीन को अप्रूवल दिया गया है। यूरोप में मॉडर्ना की वैक्सीन को बच्चों के लिए अप्रूव करने से पहले 12 से 17 साल के 3,732 बच्चों पर ट्रायल किया गया था। ट्रायल के नतीजों में सामने आया था कि वैक्सीन ने बच्चों में भी बड़ों के बराबर ही एंटीबॉडी प्रोड्यूस की है। ट्रायल के दौरान 2,163 बच्चों को कोरोना वैक्सीन दी गई थी और 1,073 को प्लास्बो। जिन 2,163 बच्चों को वैक्सीन दी गई थी, उनमें से किसी को भी न तो कोरोना हुआ और न ही कोई गंभीर साइड इफेक्ट। चीनी वैक्सीन कोरोनावैक भी 3 से 17 साल तक के बच्चों पर असरदार पाई गई है। कंपनी ने दो फेज में 550 से ज्यादा बच्चों पर वैक्सीन का ट्रायल किया था। कंपनी ने बताया कि ट्रायल में शामिल केवल दो बच्चों को ही वैक्सीनेशन के बाद तेज बुखार आया था। बाकी किसी में भी कोई साइड इफेक्ट नहीं देखा गया। वैक्सीनेशन के बाद 98% बच्चों में एंटीबॉडी भी प्रोड्यूस हुई। फाइजर ने बच्चों पर अपनी वैक्सीन की इफेक्टिवनेस पता करने के लिए 12 से 15 साल के 2,260 बच्चों पर ट्रायल किया था। इनमें से 1,131 को वैक्सीन और बाकी 1,129 को प्लास्बो दिया गया था। वैक्सीन लेने वाले 1,131 बच्चों में से किसी में भी कोई गंभीर साइड इफेक्ट नहीं देखे गए। ट्रायल के नतीजों के बाद फाइजर ने कहा था कि उसकी वैक्सीन बच्चों में 100% इफेक्टिव है।

अभी किन देशों में बच्चों को वैक्सीन दी जा रही है?

- अमेरिका मई से फाइजर की वैक्सीन को 12 साल से ज्यादा उम्र के सभी बच्चों को लगाना शुरू कर चुका है। अगले साल तक वहां 12 साल से कम उम्र के बच्चों को भी वैक्सीनेशन की शुरूआत हो सकती है।
- यूरोपियन यूनियन ने 23 जुलाई को मॉडर्ना की वैक्सीन को बच्चों के लिए अप्रूव किया है। 12 से 17 साल तक के बच्चों को यूरोपियन यूनियन में मॉडर्ना की वैक्सीन लगाई जाएगी।
- 19 जुलाई को वड ने 12 साल तक के बच्चों को फाइजर वैक्सीन लगाने की अनुमति दी है। हालांकि, अभी केवल मोर्बिडिटी वाले बच्चों को ही वैक्सीन दी जा रही है। सितंबर तक मॉडर्ना की वैक्सीन को भी अप्रूवल मिलने की संभावना है।
- इजराइल भी 12 साल तक के सभी बच्चों को वैक्सीनेट करना शुरू कर चुका है। इजराइल ने जनवरी में 16 साल तक के बच्चों का वैक्सीनेशन शुरू किया था। जून में वैक्सीनेशन का दायरा बढ़ाने के लिए 12 साल तक के बच्चों को भी वैक्सीन देने की शुरूआत की गई।
- कनाडा उन देशों में से है, जहां सबसे पहले बच्चों को वैक्सीनेशन की शुरूआत हुई। कनाडा ने दिसंबर 2020 में ही 16 साल तक के सभी लोगों के लिए फाइजर की वैक्सीन को अप्रूवल दे दिया था। मई में वैक्सीनेशन का दायरा बढ़ाते हुए 12 साल तक के बच्चों को भी इसमें शामिल किया गया।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

लखीमपुर खीरी कांड

जिले में बंद का मिला-जुला असर

बुलडाणा मे पहली बार देखने को मिले कांग्रेस , राकांपा और शिवसेना के पदाधिकारी और कार्यकर्ता एक साथ

बुलडाणा। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में बीजेपी के केंद्रीय मंत्री के बेटे पर आंदोलनकारी किसानों को कथित तौर पर अपनी गाड़ी से कुचलकर मार डालने का आरोप है . इसके विरोध में महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ महा विकास आघाड़ी सरकार द्वारा सोमवार को आयोजित महाराष्ट्र बंद का जिले में मिला - जुला असर नजर आया . कांग्रेस , शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस इन तीनों दलों के पदाधिकारी और कार्यकताओं ने आज बंद में भाग लिया . दोपहर तक शहर व जिले में बाजारपेठ बंद था . उसके बाद मात्र व्यापारियों ने अपनी दुकानें खोल लीं . इस दौरान अत्यावश्यक सेवाओं को बंद से अलग रखा गया था . अस्पताल , एंबुलेंस , दवा की दुकानें , दूध , किराना और सब्जी की दुकानें और बस सेवाएं बंद के दौरान चालू थीं . शहर के विभिन्न चौराहों पर कांग्रेस , शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं ने जमा होकर मोदी और योगी सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की. और साथ ही मोटर साईकल रैली निकाल कर महाविकास आघाडी कि ओर से शहर मे मोटर साईकल रैली निकाल कर बंद करने की अपील की । पालक मंत्री डॉ. शिंगणे के सांसद प्रतापराव जाधव, बुलडाणा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राहुलभाऊ बोंद्रे ने 9 अक्टूबर को संयुक्त प्रेस वार्ता कर जिले के लोगों से सोमवार के बंद में शामिल होने की अपील की थी. महाविकास अघाड़ी के नेताओं ने जिले भर में घूमकर व्यापारियों से बंद की अपील की. इसके बाद व्यापारियों ने अपनी दुकानें बंद कर जवाब दिया। बंद का जिले में बस सेवाओं पर कोई असर नहीं पड़ा। हालांकि यात्रियों की संख्या कम रही। दोपहर 1 बजे के बाद व्यापारियों ने अपनी दुकानें खोली। स्वाभिमानी शेतकारी संगठन ने भी शिवसेना और राकांपा द्वारा आहूत बंद का समर्थन किया। डोंगांव में स्वाभिमानी शेतकारी संगठन के पदाधिकारियों ने काली पट्टी बांधकर उत्तर प्रदेश सरकार का विरोध किया. महाविकास अघाड़ी की ओर से सखारखेड़ा के अमदापुर में सड़क जाम किया गया. इस बार कुछ व्यापारियों ने भी बंद का समर्थन किया।

मुस्लिम महासभा ने की

ईद मिलादुनब्बी पर सूखा दिवस घोषित करने की मांग

रिपोर्टर/
सैय्यद अलताफ हुसैन

आमेट। मुस्लिम महासभा के रास्ट्रीय सह सचिव जाफर खान फौजदार,जिला उपाध्यक्ष फारुख पठान,एडवोकेट नूर मोहम्मद,अशरफ शेख,अरशद शैख आदि द्वारा ईद मिलादुन्नबी के मौके पर सूखा दिवस घोषित करने हेतु माननीय मुख्यमंत्री महोदय राजस्थान सरकार के नाम का ज्ञापन आज उपखंड अधिकारी आमेट को ज्ञापन दिया गया जिसमें प्रदेश में गांधी जयंती व महावीर जयंती के मौके पर सरकार द्वारा सुखा दिवस घोसित है मुस्लिम समाज द्वारा सरकार से विभिन्न तरीकों से मांग वह जयपुर में दिनांक 21 जनवरी 2013 कारे शांतिपूर्ण प्रदर्शन के बाद तत्कालीन सरकार ने आदेश क्रमांक प 4(17)वित्त /आब/2004 जारी कर ईद मिलादुन्नबी के मौके पर राजस्थान में सूखा दिवस घोषित किया था लेकिन सरकार बदलने के साथ ही फैसला भी बदल दिया गया और सूखा दिवस समाप्त कर दिया गया जोकि सरासर गलत भी है ओर धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ भी, इसी वर्ष ईद मिलादुन्नबी का त्योहार हमारे पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहो ताला अलेही वसल्लम के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है जिन्होंने अमन व भाईचारे का पैगाम दिया और समाज में फैली बुराइयों से दूर रहने की सीख दी आप ने शराब खोरी को हराम करार दिया पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहो ताला अलेही वसल्लम के दौर से पहले शराब पूरी आम थी और लोग शराब के नशे में चूर होकर हराम कामों में लिप्त रहते थे सबसे पहले हमारे पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहो ताला अलेही वसल्लम ने ही शराबखोरी को हराम करार दिया और लोगों को सही रास्ते पर चलना सिखाया क्योंकि शराबबंदी सिर्फ मुस्लिम समुदाय के लिए ही नहीं अपीतू सर्व समाज के लिए फायदेमंद है।अतः जनहितों को ध्यान में रखते हुए मुस्लिम समाज की धार्मिक भावनाओं के मद्देनजर गुजारिश की गई कि ईद मिलादुन्नबी 19 अक्टूबर मंगलवार के मौके पर सूखा दिवस घोषित किया जाए ताकि ऐसे शुभ अवसरों पर किसी प्रकार का कोई व्यवधान ना हो पाए।

यूपी में आया बड़ा बिजली संकट!

बस कुछ दिन बाद छा जाएगा चारो तरफ अँधेरा ही अँधेरा

संवाददाता/अरमान उलहक

लखनऊ। उप्र में बिजली संकट बढ़ने वाला है। कोयले की कमी के कारण उप्र की 8 यूनिट बंद हो गई थी। स्थिति यह है कि तमाम कोशिश के बाद भी अगले एक सप्ताह तक इससे राहत मिलता नजर नहीं आ रहा है। खुद पावर कॉरपोरेशन के अधिकारी मान रहे हैं कि 15 अगस्त तक परेशानी रहेगी। अब यूनिट बंद होने से बिजली कटौती भी बढ़ गई है। इसमें सबसे ज्यादा परेशानी ग्रामीण सेक्टर में है। उप्र राज्य विद्युत उपभोक्ता फोरम के अध्यक्ष अवधेश वर्मा ने आरोप लगाय है कि ग्रामीण सेक्टर में 7 से 8 घंटे का पावर कट लग रहा है।

यहां तक की कुछ बड़े महानगरों को छोड़ दिया जाए तो ज्यादातर जगहों पर बिजली कटौती बड़ गई है। आंकड़ों की बात करे तो उप्र में मौजूदा समय में बिजली की मांग 20,000 से 21,000 मेगावाट के बीच है। वहीं सप्लाई सिर्फ 17000 मेगावाट तक हो पा रही है। ऐसे में

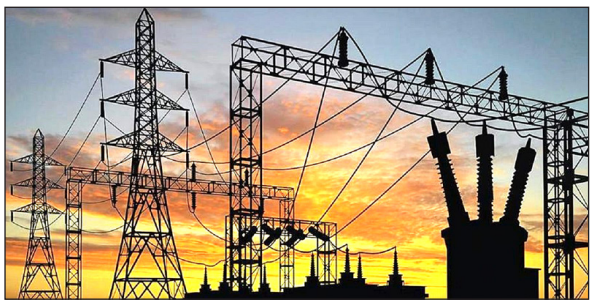

20 रुपए प्रति यूनिट तक बिजली खरीदी जा रही

इस कमी को पूरी करने के लिए एक्सचेंज से पावर कॉरपोरेशन बिजली खरीद रहा है। अधिकारियों का कहना है कि यह बिजली 15 से 20 रुपए यूनिट तक पड़ रहा है। हालांकि बिजली की कीमत अधिक होने के कारण पावर कॉरपोरेशन ज्यादा मात्रा में एक्सचेंज से बिजली नहीं खरीद पा रहा है।

यह पावर प्लांट बंद हो गए है

ललितपुर यूनिट-2 660 मेगावाट ललितपुर यूनिट-3 660 मेगावाट रोजा यूनिट-2 300 मेगावाट ऊंचाहार यूनिट-6 190 मेगावाट हरदुआगंज यूनिट-9 250 मेगावाट पारीछा यूनिट-4 210 मेगावाट पारीछा यूनिट-5250 मेगावाट हरदुआगंज यूनिट- 7105 मेगावाट

चार हजार मेगावाट बिजली की कमी होने लगी है। बताया जा रहा है कि इसका सबसे ज्यादा असर पूर्वांचल और मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के ग्रामीण इलाकों में पड़ रहा है।

नबी बख्श जी गौरी देशनोक,सायरा बानो की फातिहा में लिया निर्णय

कोम नागौरी तेलियान का सराहनीय कदम,बारात लेट होने पर लगेगा जुर्माना व दण्ड

रिपोर्टर/ सैय्यद अलताफ हुसैन

बीकानेर, देशनोक। देशनोक में फातिहा के बाद देशनोक धड़ा खारी पट्टी सहित एक जगह बैठ कर कुछ समाज की कुरीतियों पर चर्चा की इसमें सबसे अहम बात बरात का देरी से पहुंचना थी जिस पर बात हुई और देशनोक धडे और खारी पट्टी के भाइयों ने यह निर्णय लिया की शादी के मौके पर बारात टाइम से पहुंचे।और दूल्हा अगर निकाह में दिन में 11:00 बजे और शाम रात 9 बजे तक ना पहुंचा तो दूल्हे के वालिद को माफी के साथ 11000 जुर्माना देना पड़ेगा और बारातियों को चाय नाश्ता प्लेट बगैरा कुछ नहीं दिया जाएगा सीधा घर पर खाने पर आमंत्रित होगा।इस पर सभी भाइयों ने सहमति दी और एक लेटर लिख कर सभी ने साइन किया।

कोविड-19 संक्रमण के अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों पर बढ़ती उम्र संबंधी बीमारियों और मधुमेह के प्रभावों पर दुनिया भर में अध्ययन किये जा रहे हैं।

अब डायबिटीज और मोटापे की दवाओं से होगा कोरोना का इलाज

मधुमेह, मोटापे और बढ़ती उम्र संबंधित बीमारियों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मौजूदा दवाओं का उपयोग संभावित रूप से कोरोना के इलाज के लिए किया जा सकता है। यह बात भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), भोपाल के एक अनुसंधान में सामने आयी है।

टीम ने हाल ही में कोविड-19, उम्र बढ़ने और मधुमेह के बीच जैव-आणविक संबंधों की समीक्षा प्रकाशित की है। समीक्षा को ह्यमॉलिक्यूलर एंड सेल्युलर बायोकैमिस्ट्रीह्व पत्रिका में प्रकाशित किया गया है और यह कोविड-19 चिकित्सा विज्ञान में भविष्य की दिशा में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

आईआईएसईआर, भोपाल के इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर फॉर आंत्रप्रेन्योरशिप (आईआईसीई) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमजद हुसैन ने कहा, ह्यऐसे में जब लगभग दो साल से कोरोना महामारी दुनिया को प्रभावित किये हुए है, हम धीरे-धीरे वायरस और उसके काम करने के तरीके को समझने लगे हैं। अब यह ज्ञात है कि वायरल संक्रमण का प्रभाव अधिक आयु वाली आबादी और मधुमेह से पीड़ितों पर अधिक होता है।

उन्होंने कहा, कोविड-19 संक्रमण के अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों पर बढ़ती उम्र संबंधी बीमारियों और मधुमेह के प्रभावों पर दुनिया भर में अध्ययन किये जा रहे हैं। प्रकाशित समीक्षा से पता चलता है कि मधुमेह, बढ़ती उम्र संबंधी बीमारियां और कोविड-19 की स्थितियां ऑक्सीडेटिव तनाव से जुड़ी हैं। साथ ही प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया में कमी और उनसे उत्पन्न होने वाली जटिलताओं से हृदय संबंधी विकार, नेत्र रोग, तंत्रिका रोग और गुर्दे की समस्याओं जैसी कई अन्य बीमारियों की शुरूआत होती है।

इसलिए खोजी जा रही है कोरोना के इलाज की संभावना

हुसैन ने कहा कि हमारे पास रैपामाइसिन जैसी कुछ मौजूदा संभावित एंटी-एजिंग दवाओं के भी सबूत हैं, जिन्हें इन बीमारियों से जुड़े सामान्य जैव रासायनिक मार्गों के कारण कोविड-19 उपचार के लिए इनके इस्तेमाल की संभावना खोजी जा सकती है। ऐसा ही एक और उदाहरण एक दवा मेटफॉर्मिन है, जिसे आमतौर पर डायबिटीज नियंत्रित करने के लिए उपयोग किया जाता है। वैज्ञानिकों ने यह दिखाने के लिए कम्प्यूटेशनल अध्ययन भी किया है कि कोशिका झिल्ली में मौजूद लिपिड कोरोनावायरस संक्रामकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रमुख शोधकर्ता ने कहा कि संभावित यौगिकों के मौजूदा पूल से प्रभावी चिकित्सा विज्ञान का चयन करने की तत्काल आवश्यकता है, क्योंकि एक नयी दवा की खोज और इसकी मंजूरी में अधिक समय लगता है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि करक्यूमिन और रेस्वेराट्रोल जैसे प्राकृतिक यौगिकों और मौजूदा दवाओं जैसे मेटफॉर्मिन और रैपामाइसी में कोविड-19 और पोस्ट-कोरोनावायरस सिंड्रोम के उपचार के लिए बड़े पैमाने पर परीक्षण किये जाने की क्षमता है।

नाक के ब्लैक हेड्स करते हैं परेशान

दमकता, बेदाग और खूबसूरत चेहरा पाने के लिए बाजार में इन दिनों कई तरह के ब्यूटी प्रॉडक्ट मिलते हैं। कुछ मिनटों में ग्लो का दावा करते हैं तो कुछ फ्लॉलेस स्किन का। लेकिन कई महिलाएं ऐसी हैं जो रोजाना के स्किन केयर के लिए समय नहीं निकाल पाती जिसकी वजह से उनकी स्किन पर कई तरह की समस्या नजर आने लगती है। इसमें सबसे आम समस्या है नाक पर होने वाले ब्लैक हेड्स। इनके कारण नाक का कलर डार्क दिखने लगता है। कई महिलाएं घर में जब ब्लैकहेड्स निकालने की कोशिश करती हैं तो वह खुद को चोटिल कर लेती है। ऐसे में अगर आप भी घर में ही ब्लैकहेड्स निकालना चाहती हैं तो आप होममेड ब्लैकहेड रिमूवल स्ट्रिप का इस्तेमाल कर सकती हैं। तो जानते हैं घर में कैसे बनाएं जाएं ब्लैक हेड्स रिमूवल स्ट्रिप।

छुटकारा पाने के लिए अपनाएं ये 2 घरेलू तरीके

1) शहद और शक्कर

इसके इस्तेमाल से डेड सेल्स से मुक्ति मिलती है, वहीं शहद और नींबू स्किन के कालेपन को दूर करने में मदद करते हैं। साथ ही इससे ग्लोइंग और सॉफ्ट स्किन पाने में मदद मिलती है। इसे बनाने के लिए एक पैन में 3 चम्मच चीनी, 2 चम्मच शहद और 1 चम्मच नींबू का जूस मिलाएं। इसे धीरी आंच पर गर्म करें और चीनी पिघलने का इंतजार करें। जब सारा सामान एक दूसरे से अच्छे से मिल जाए को गैस बंद ककें और इसमें 3 चम्मच गिलिसरीन को अच्छी तरह से मिक्स करें। पूरी नाक पर अच्छी तरह से 20 मिनट के लिए लगाएं और सूखने दें।

2) दूध और जिलेटिन

दूध स्किन को पोषण देने के साथ निखारने में मदद करता है। इसे बनानेन के लिए 1 चम्मच दूध और एक चम्मच जिलेटिन पाउडर एक कटोरे में मिक्स करें। इसके बाद इस मिश्रण को 2-3 मिनट के लिए माइक्रोवेव में गर्म करें। जब ये गाढ़ा हो जाए तो इसे नाक पर लगाएं । कम से कम आधे घंटे तक लगा रहने दें और फिर इसे निकालें।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर